'अपना कल बेहतर बनाने के लिए आज कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी'

जागरण
हारना नहीं है...
■ ज्योति प्रकाश खरे

उप-महानिरीक्षक कलानिधि नैथानी

इस्कूल व इण्टरमीडिएट की बोर्ड परीक्षाए अब सिर पर आ गई है। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की सेमेस्टर परीक्षाए तो शुरू हो गई है। विद्यार्थी तैयारी मे जुट गए है, जबकि अच्छे अक की होड भी शुरू हो गई है। और इसने कुछ विद्यार्थियो की टेंशन बढा दी है। परीक्षा की तैयारी और सफलता के सूत्र देने के लिए "जागरण" द्वारा मुहिम शुरू की गई है। इसके तहत ऐसी शख्सियत से आपकी मुलाकात कराई जा रही है, जिन्होने तमाम कठिनाइयो का सामना कर सफलता का शिखर छू लिया है। इस बार "जागरण" ने पुलिस उप-महानिरीक्षक कलानिधि नैथानी से बातें की। उन्होने अपने विद्यार्थी जीवन के अनुभव से लेकर सफलता के अनेक सूत्र साझा किए। डीआइजी ने कहा- "विद्यार्थियो को अपना कल आसान बनाने के लिए आज कड़ी मेहनत करनी ही पड़ेगी।"

दृढ़ संकल्प

बचपन में ही अफसर बनने का ले लिया था संकल्प

पुलिस उप-महानिरीक्षक कलानिधि नैथानी ने बताया कि बचपन मे जब वह किसी प्रशासनिक अधिकारी की जीवन शैली देखते थे, तो बहुत अच्छा लगता था। इसके बाद से ही उन्होने मन मे ठान लिया था कि खुद को इतना काबिल बनाएगे कि दुनिया देखती रह जाएगी। कलानिधि का कहना है कि सपनो को सच करने से पहले सपनो को ध्यान से देखना होता है। यकीन मानिए, यदि आप सफल होना चाहते है तो आप अपने काम मे एकाग्रता लानी होगी। कलानिधि ने बताया कि जब वह पहाड़ी क्षेत्र मे होते है तो उनको ट्रैकिंग करने के अलावा मोटरसाइकिल से घूमना बहुत अच्छा लगता है। जब वह मैदानी क्षेत्र मे होते है तो उनको खेलना बहुत अच्छा लगता है। छात्रो को सन्देश देते हुए कलानिधि ने कहा कि 'किसी एक परीक्षा पर जीवन की सफलता निर्भर नही करती। बहुत से ऐसे लोग है, जो कई बार असफल होते है, लेकिन मेहनत और प्रयास करने से अपने लक्ष्य तक जरूर पहुचते है। जीत मे खुश होना सभी को आता है, लेकिन कहते है "जो जीता वही सिकन्दर कहलाता है।" कभी हारे तो निराश ना हो, हर हार सिखाती है कि प्रयासो में कुछ कमी रह गई है। हिम्मत ना हारे, पूरे मन से लक्ष्य के प्रति जुट जाए, सतत प्रयास ही सदैव सफलता दिलाते है।

हाइस्कूल के बाद रमा पढ़ाई में मन, कड़ी मेहनत ने बनाया डीआइजी

पुलिस उप-महानिरीक्षक कलानिधि नैथानी ने बताया कि प्रारम्भिक कक्षाओ मे उनका मन पढाई मे नही लगता था, इसलिए शिक्षा का स्तर औसत से भी कम था, लेकिन कक्षा 6 के बाद अहिस्ता-अहिस्ता उनकी दिलचस्पी पढाई मे बढने लगी। आइसीएससी बोर्ड से हाइस्कूल करने पर उनकी गिनती होशियार विद्यार्थियो मे की जाने लगी। आगे की शिक्षा मथुरा के आर्मी पब्लिक स्कूल से की और इसके बाद पन्तनगर से इलेक्ट्रोनिक व कम्युनिकेशन से एंजिनियरिंग की और न्यूक्लियर साइण्टिस्ट के लिए हैदराबाद मे उनका चयन हो गया। बगलुरु के अनुसन्धान केन्द्र मे 2 वर्ष तथा दिल्ली मे 2 साल नौकरी करते हुए ही उन्होने सिविल सर्विसेज की तैयारी की। दूसरे प्रयास मे उनका चयन भारतीय पुलिस सेवा मे हो गया। उत्तर प्रदेश के 2010 बैच के आइपीएस अधिकारी कलानिधि प्रदेश की राजधानी लखनऊ से लेकर गाजियाबाद, अलीगढ और बरेली महानगर की कमान भी सँभाल चुके है। हर जिले मे अपनी कार्यशैली की अलग पहचान छोड़ी, जो उनके व्यक्तित्व मे शामिल है। अब उन्हे पदोन्नत करते हुए एसपी से डीआइजी झाँसी का पदभार सौपा गया है। वह कड़क अनुशासन, बेहतर कानून व्यवस्था, न्याय प्रियता, सिस्टमैटिक क्राइम कण्ट्रोल के साथ सटीक सुनवाई के लिए जाने जाते है।

दादाजी ने किया था 'कलानिधि' का नामकरण

कलानिधि नैथानी ने बताया कि उनका नामकरण उनके दादाजी ने किया था। कलानिधि का पर्यायवाची 'चन्द्रमा' होता है। बचपन से ही दादाजी को यह उम्मीद थी कि उनका पोता आगे जाकर परिवार का नाम जरूर रोशन करेगा और आज उन्होने दादाजी का सपना साकार कर दिया।

प्रेरणा

- कल को आसान बनाने के लिए आपको आज कडी मेहनत करनी ही पडेगी।
- कोई एक परीक्षा जीवन की सफलता तय नहीं करती है।
- जीवन मे असफल वही होता है, जो हालात से निराश होकर हार मान लेता है। जो बार-बार प्रयास करते है, उन्हे सफल होने से कोई ताकत रोक नहीं सकती है।
- जीवन मे सफलता-असफलता का आना-जाना लगा रहता है। बडे लक्ष्य हासिल करना है तो प्रयासो मे कमी न होने दे। कठिन समय मे भी ऐसा व्यवहार करे, जो आपको सफलता के करीब ला दे।

इनके बारे में

- अलीगढ से स्थानान्तरित होकर झाँसी पुलिस उप-महानिरीक्षक बनाए गए कलानिधि नैथानी मूलरूप से पौड़ी गढवाल (उत्तराखण्ड) के निवासी है। उनका पूरा परिवार शिक्षा के क्षेत्र से जुडा है। उनके पिता उमेश चन्द नैथानी गढवाल विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत हुये। माँ डॉ. कुसुम नैथानी इण्टर कॉलिज के प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत है और उन्हे राष्ट्रपति पुरस्कार भी मिला है, जबकि दादा सुमन नैथानी भी शिक्षक रहे है।

ऐसा करें भोजन

खाली पेट परीक्षा देने न जाएं, खाने में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाएं

परीक्षा के दौरान विद्यार्थियो को पढाई के साथ खान-पान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। डीआइजी ने कहा कि इस दौरान विद्यार्थी फलो का नियमित सेवन करे। कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम करे, जबकि प्रोटीन युक्त भोज्य सामग्री की मात्रा बढ़ाए। खाली पेट परीक्षा देने न जाए, पानी खूब पिए। परीक्षा के दौरान खेल-कूद से दूरी नहीं बनाए, बल्कि इसके लिए व्यस्तता मे भी समय निकाले।

मेरे विचार

"कलानिधि नैथानी का कहना है की असफल लोगो की सख्या दुनिया मे काम नही है, लेकिन जिन्होने हर पल एक नई शुरूआत के साथ जिन्दगी जीने की ठानी, उन्होने कामयाबी के शिखर पर जाकर इतिहास रचा है। इसलिए असफलताओ को लेकर अवसाद से मुक्त होकर जिन्दगी के नए पायदान पर चढे।"

विद्यार्थियों के लिए डीआइजी के टिप्स

- इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स और इण्टरनेट का सदुपयोग करें।
- स्टैण्डर्ड किताबो से ही स्टडी करे।
- कोचिंग सेण्टर की भ्रामक बातो से सदैव बचे।
- पढाई के दौरान सोशल मीडिया से दूरी बनाकर रखे।
- एकान्त मे पढाई करने की आदत डाले।
- खुद के बने नोट्स को बार-बार रिवाइज करे।